26.03.2020

"लॉकडाउन "- शिक्षा के लिए एक सुनहरा अवसर
Lockdown-An opportunity for Education

"सा विद्या या विमुक्तये" विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करे। जिसके द्वारा हम रोग, शोक, द्वेष, पाप, दीनता, दासता, गरीबी, बेकारी, अभाव, अज्ञान, दुर्गुण, कुसंस्कार, आदि की दासता से मुक्ति पा सकें। विद्या वह है जो ज्ञान, मूल्य एवं कौशल का रसपान करा सके। जो शील, स्वास्थ्य, संयम, विवेक, विनय, श्रद्धा, उत्साह, वीरत्व, सेवा, सहयोग का भाव जगा सके।

प्राचीन काल में यही शिक्षा तोता-रटंत की अपेक्षा प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुभव, क्रिया एवं सीख के माध्यम से होती थी। जीवन जीने के लिए हर बच्चे को आवश्यक, उपयोगी एवं कौशलपूर्ण शिक्षा दी जाती थी। दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोल, भूगर्भ, प्राणिशास्त्र, रसायन, शिल्प, वास्तु, अर्थ, नीति, धर्म आदि के विद्वान घर-घर होते थे और इन विषयों की वे क्रियात्मक तरीके से अनुभवपूर्ण शिक्षा प्राप्त करते थे। उस समय तो भारत सोने की चिड़िया हुआ करता था। वह व्यापार एवं अध्ययन का सिरमौर होता था।

आज की स्कूली शिक्षा ज्ञान तो दे रही है लेकिन कौशल विकास नही कर पा रही है। चरित्र निर्माण का प्रयास तो कर रही है लेकिन मूल्यों का बीजारोपण नहीं कर पा रही है। शत-प्रतिशत अंक तो दे रही है लेकिन रचनात्मकता का विकास नहीं कर पा रही है। स्कूली शिक्षा एवं व्यावहारिक जीवन के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही है। ज़्यादातर बच्चे उन रोजगारों में भाग्य आज़मा रहे हैं जिनमें उनका इनट्रेस्ट कभी था ही नहीं। यह स्थिति समाज एवं राष्ट्र दोनों के विकास में बाधक है।

आख़िर यह स्थिति क्यों है?
जब हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क, एन.सी.ई.आर.टी., सी.बी.एस.ई एवं एकेडमिक बाडीज़ के सारे पॉलिसी डाक्यूमेंट्स इस बात पर ज़ोर देते हैं कि शिक्षा अनुभवपरक, व्यावहारिक, नैतिक, प्रयोगात्मक, कौशलपूर्ण, आनंददायक एवं रोज़गारोन्मुख होनी चाहिए तो बातें ज़मीन पर क्यों नहीं उतर रहीं हैं ?

यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि शिक्षा के उच्च पायदान पर बैठे विश्व के ज़्यादातर देशों में वही मूल विषय पढ़ाए जाते हैं जो भारत में पढ़ाए जाते हैं।

तो कमी कहाँ है? ग़ैप कहाँ है? समस्या कहाँ है? वस्तुत: यहाँ असली खेल पढ़ाने एवं सिखाने के तरीक़ों को लेकर है। टीचिंग लरनिंग प्रोसेस को लेकर है। करीकुलम को लेकर है। पेडागॉजी को लेकर है। हम पढ़ाने पर ज़ोर देते हैं, वे सिखाने पर ज़ोर देते हैं। हम कंटेंट पर ज़ोर देते हैं, वे लरनिंग आउटकम पर ज़ोर देते हैं। हम ज्ञान पर ज़ोर देते हैं, वे ज्ञान के प्रयोग पर ज़ोर देते हैं।

यहाँ असली गेमचेंजर " टीचर " है। एक योग्य, ट्रेन्ड, पैसनेट, अफेक्सनेट एवं अपने प्रोफ़ेशन से प्यार करने वाला टीचर पूरी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पैराडाइम को शिफ़्ट कर सकता है। इसमें समाज,सरकार,स्कूल एवं खुद टीचरों का रोल बेहद महत्वपूर्ण होगा।

"लॉकडाउन" का यह समय बच्चों, अध्यापकों एवं अभिभावकों तीनों के लिए गोल्डन अपरच्वनिटी लेकर आया है। सबके पास असीमित समय, घर जैसी प्रयोगशाला एवं इंटरनेट पर मौजूद दुनिया के सारे संसाधन चुटकियों में उपलब्ध हैं। बच्चों के लिए तो पूरा घर लरनिंग सेंटर हो सकता है। ई - क्लासेस, प्रोजेक्ट्स, एक्टिविटीज, फ़न, गेम्स,वीडियो शूट्स और ढेरों ऐसी गतिविधियाँ रोट लरनिंग से निजात दिला सकती हैं। टीचर्स के लिए तो खुद को अपग्रेड करने का यह सुनहरा मौक़ा है। ऑन-लाइन टीचिंग, ई- कंटेंट, खुद के वीडियोज, लेसन प्लान एवं असाइनमेंट्स के क्षेत्र में वे विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं। अभिभावक इन क्षणों का उपयोग बच्चों के साथ खेलने, दोस्ती करने, भावनात्मक सपोर्ट देने, आदतों एवं कलाओं का विकास करने, किचेन में समय बिताने एवं फ़ैमिली के साथ क्वालिटी टाईम बिताने में कर सकते हैं ।

आइए इस विमर्श को बच्चों पर केंद्रित करते हैं एवं बच्चों से बात करते हैं ।
हमें मालूम है कि पूरे वर्ष भर कड़ी मेहनत एवं पढाई के बाद आने वाले ये महीने आपकी मस्ती के होते हैं। यह वह समय होता है जब आप दिन भर दोस्तों में मशगूल होते हैं। जब आप मां-बाप के साथ छुट्टियों में घूमने की योजना बनाते हैं। जब आपको पार्क, सिनेमा हॉल, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, समर कैम्प्स, मॉल्स, वाटर पार्कस एवम् दोस्तों के घर सबसे ज्यादा आकर्षित करते हैं। प्यारे बच्चों, हमें मालूम है कि "कोरोना" महामारी के कारण पूरा देश ख़ुद को "लॉकडाउन" कर चुका है। घर की चारदीवारी में बंद होकर न सिर्फ आप बोर हो रहे होंगे वरन दोस्तों से न मिल पाने के लिए परेशान भी हो रहे होंगे। कुछ बच्चे तो पूरी परीक्षा न दे पाने के कारण असमंजस में भी होंगे।

हर घटना एक अवसर लेकर आती है। "लॉकडाउन" के कारण घर में मिला हुआ यह असीमित समय भी आपके लिए किसी वरदान से कम नहीं। यहाँ स्कूल एवं घर के दबाव से मुक्त आपके

सपने आसमानी उड़ान भर सकते हैं। अपने शौक और इच्छाओं को पूरा करने का इससे सुनहरा अवसर दोबारा नहीं मिलेगा। आप अपने हुनर, कौशल एवं क्षमताओं को तराशते हुए नए भविष्य की राह चुन सकते हैं।

आइए, हम उन छोटी- छोटी बातों की चर्चा करते हैं जिन्हें आप कर सकते हैं। अपनी सुबह का प्रारम्भ हल्के शारीरिक व्यायाम, ध्यान एवं योग से करें स्ट्रेचिंग एवं ज्वाइंट्स मूवमेंट्स के बाद पांच से दस मिनट अपना ध्यान श्वास एवं विचारों के प्रवाह पर ले जाएं। हो सके तो यह कार्य बंद आंखों से करें। ध्यान के इसी क्रम में अच्छी स्मृतियों को याद करते हुए मां-बाप, ईश्वर और गुरुजनों का मन ही मन शुक्रिया अदा करें। दस से बीस मिनट की यह क्रिया न सिर्फ आपको शारीरिक एवं मानसिक आनंद देगी बल्कि आपकी एकाग्रता, रचनात्मकता, अनुशासनशीलता, धैर्य एवं स्मरण शक्ति को भी बढाने में सहायता करेगी। आप ख़ुद महसूस करेंगे कि आपका तनाव, गुस्सा एवं चिड़चिड़ापन भी चुटकियों में गायब हो गया।

लॉकडाउन के इस समय हमारे घरों में हाउसकीपिंग एवं अन्य कार्य में लगे भैया, दीदी एवं हेल्पर्स भी नहीं आ रहे होंगे। क्या कभी आपने घरेलू काम करने वाले इन लोगो के बारे में सोचा है। क्या आपको अच्छा लगेगा अगर यही कार्य खुद आपको दूसरों के घर में करना पड़े । मैं तो यही कहूंगा कि इस स्वर्णिम समय का उपयोग आप अपनी कलाओं एवं नई-नई आदतों का विकास करने में करें। कमरे की सफाई, बेडिंग, क्लीनिंग एवं बाथरूम की वाइपिंग का कार्य अपने हाथों से करें। अलमारी से कपड़े निकालने, नहाने, पुराने कपड़ों को धोने एवं सुखाने, जूते पॉलिश करने, कॉपी किताबों की डस्टिंग इत्यादि का कार्य स्वयं करें। इससे न सिर्फ श्रम एवं मेहनत के कार्य में लगे लोगों के प्रति आपके मन में सम्मान पैदा होगा वरन् आपको शारीरिक एवं मानसिक सुख भी प्राप्त होगा ।

आपको तब और मजा आएगा जब आप किचेन में मम्मी और पापा का हाथ बटाएंगे। फ़ुरसत के इन क्षणों में आप कुकिंग की कला अवश्य सीख लें। उस दिन आपके आनंद की सीमा नहीं रहेगी जब डायनिंग टेबल पर बैठा पूरा परिवार आपके हाथों की बनी हुई सब्जी, दाल, रोटी, और सलाद का आंनद ले रहा होगा। आपकी यह आदत न सिर्फ आपकी रचनात्मकता एवं प्रयोगशीलता बढ़ाएगी वरन् आपके मूड को फ्रेश एवं तनाव मुक्त भी करेगी। आपको यह भी बताता चलूं कि विदेशों में यह कार्य ज्यादातर लोग खुद करते है क्यों वहां श्रम की क़ीमत और सम्मान दोनों बहुत ज्यादा है।

परीक्षाओं के बाद वैसे भी बच्चे तमाम सारी एक्टिविटीज , समर कैंप्स, आउटडोर गेम्स थिएटर, डांस, ड्रामा एवं और भी ढेरों गतिविधियों में खुद को जोड़ लेते है। मैं आपको यही सलाह दूंगा कि फुरसत के इन क्षणों में आप अपना मनपसंद शौक जरूर पूरा करें। आजकल आन-लाइन क्लासेस के माध्यम से आप म्यूज़िक, डांस, ड्रामा , वादन, गायन,भाषण , थिएटर, ड्रेस डिज़ाइनिंग , इंटीरियर डिज़ाइनिंग , ड्राइंग, पेंटिंग, रोबोटिक्स एवं अन्य कोर्सेज को ज्वाइन कर सकते हैं । इनकी छोटी-छोटी विडियोज बनाकर दोस्तो एवं रिश्तेदारों को भेजें। स्कूल की वेबसाइट पर भी पोस्ट करें। अपनी रचनात्मक का उपयोग करते हुए नए-नए लिरिक्स, गीत, एल्बम एबं डायलॉग्स का सृजन करें। अपनी साहित्यिक प्रतिभा को तराशते हुए कविताएं, कहानियां, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज, चुट्कले, भाषण एवं गीत का सृजन करें। ये गतिविधियां आपकी रचनात्मकता, सम्वेदनशीलता, उत्सवधर्मिता, सहनशीलता एवं मनुजता को तो बढ़ाती ही हैं वरन् हिंसा , तनाव डिप्रेसन एवं कुंठा भी दूर करती हैं। मेरा अगाध विश्वास है कि अगर हमारे बच्चे पढ़ाई में अव्वल होने के साथ-साथ साहित्यकार, कलाकार एवं शिल्पकार भी होंगे तो शिक्षा अपने चरम उद्देश्य को प्राप्त होगी।

21वीं शताब्दी क्षमता विकास और कौशल विकास की सदी है। लॉकडाउन के इस समय का उपयोग आप अपनी क्षमताऔं के दोहन एवं 21वीं सेंचुरी स्किल्स के विकास में करें। वह समय गया जब रटकर 100 में से 100 नंबर लाने वाले बच्चे सबसे होनहार होते थे। अब नंबरों का स्थान स्किल्स ने ले लिया है। दुनिया की सारी कम्पनियां एवं आर्गनाइजेशन अब इनोवेटर्स, क्रियेटर्स, कोलैबोरेटर्स, कमयुनिकेटर्स, थिंकर्स, एनालाइजरस, लीडर्स, एवं सोशल स्किल्स रखने वाले वर्कर्स तलाश रही हैं। मैं बच्चों, अभिभावकों, एवं अध्यापकों से अपील करूंगा कि इस समय का उपयोग वे अपनी क्षमताऔं का विकास करने में करें। माता-पिता एवं उनके स्कूलों से मेरा निवेदन है कि इस समय बच्चों को उन गतिविधियों में शामिल करें जिनसे उनमें कम्युनिकेशन स्किल्स, लीडरशिप, एवं टीम भावना विकसित हो सकें। थियेटर, ड्रामा,रोल प्ले, स्टोरी टेलिंग, रीडिंग, राइटिंग, गेम्स आदि के माध्यम से 21वीं सेनचुरी स्किल्स का पूरा विकास किया जा सकता है। घर में ही मिनी संसद, न्यायालय, प्रेस कांफ्रेंस , पंचायत, चौपाल , क्लासरूम , अस्पताल, डाकघर, फ़ैक्ट्री, मार्केटिंग , सेल्स एवं बाज़ार के सीन क्रिएट करें एवं रोल प्ले करें। इनकी वीडियो रिकार्डिंग करके बार-बार अपनी परफ़ॉर्मेंस को दुरुस्त करें । मैं आपसे यह भी निवेदन करूँगा कि अपनी रूचि के क्षेत्र में रिसर्च एवं अनुसंधान को अवश्य बढ़ावा दें । छुट्टियों के इस माहौल में कोई न कोई इनोवेशन/ आविष्कार अवश्य करें । आपके छोटे-छोटे प्रयोग ही आगे चलकर आपको एडिशन एवं आइंस्टाइन की क़तार में खड़ा करेंगे।

पूरी दुनिया 21वीं शताब्दी को डिजिटल क्रांति के रूप में याद कर रही है ।इस दुनिया में सफल होने के लिए एवं चोटी पर रहने के लिए आपको हर क्षण बदलती टेक्नोलॉजी से अपने को अपडेट रखना होगा। “लॉकडाउन” के इस समय का उपयोग सबसे ज्यादा डिजिटल माध्यमों से हो सकता है।

इस समय देश के ज्यादातर सीबीएसई स्कूलों ने ऑनलाइन क्लासेस प्रारंभ कर दी हैं। एच आर डी मिनिस्ट्री के दीक्षा प्लेटफार्म पर सीबीएसई ने अधिकतर विषयों के ई-कंटेंट लांच कर दिए हैं। गूगल क्लासरूम, खान एकेडमी, बाईजू जैसे अनेक ऐसे प्लेटफार्म है जिनका उपयोग करके स्कूल एवं बच्चे अपनी पढ़ाई शुरू कर चुके हैं। इस अवसर पर मैं बच्चों और अध्यापकों दोनों से अपील करूंगा कि बच्चों को प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, एक्टिविटिज एवं ई-कंटेंट तत्काल ऑनलाइन माध्यम से भेज दें जिससे बच्चे उनका भरपूर उपयोग कर सकें। मैं बच्चों को यह भी बताना चाहूंगा कि एच आर डी मिनिस्ट्री ने स्वयंम पोर्टल एवं स्वयंम प्रभा चैनल के माध्यम से डिजिटल लर्निंग मैटिरियल और अवसर उपलब्ध कराएं हैं। हमें इस कठिन समय को एक अवसर में बदलते हुए देश के हर घर को लर्निंग एवं स्किल सेंटर के रूप में बदल देना चाहिए। स्कूलों, अध्यापकों एवं अच्छी शिक्षा की कमी से जूझते देश को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए एवं फिजिकल क्लासरूम से उठकर डिजिटल क्लासरूम को तेजी से बढ़ावा देना चाहिए। कल्पना कीजिए जब एक उत्कृष्ट अध्यापक डिजिटल क्लासरूम के द्वारा हजारों बच्चों को एक साथ सिखा रहा होगा तो बुक्स, कंटेंट, स्कूल एवं अच्छे टीचर की कमी सदा के लिए खत्म हो जाएगी।

आइए लॉकडाउन के अवसर का लाभ उठाते हुए बच्चों को मुस्कुराने का मौका दें और एक भारत श्रेष्ठ भारत के सपने को साकार करें।

अनुराग त्रिपाठी
सचिव, सीबीएसई